

प्युठान जिल्लाको पश्चिम दक्षिण क्षेत्रमा प्रचलित मारुनी
लोक नाटकको अध्ययन

त्रिभुवन विश्व विद्यालय, मानविकी तथा सामाजिक शास्त्र सङ्काय
अन्तर्गत नेपाली केन्द्रीय विभागको स्नातकोत्तर तह
दोस्रो वर्षको दसौं पत्रको
प्रयोजनका लागि
प्रस्तुत

शोधपत्र

शोधार्थी

मीन बहादुर पुन मगर
नेपाली केन्द्रीय विभाग
त्रिभुवन विश्व विद्यालय
कीर्तिपुर, काठमाडौं
२०६९

शोध मूल्याङ्कनको सिफारिस

नेपाली एम. ए. शैक्षिक वर्ष ०६५/६६ दोस्रो वर्षका विद्यार्थी मीन बहादुर पुन मगरले प्युठान जिल्लाको पश्चिम दक्षिण क्षेत्रमा प्रचलित मारुनी लोक नाटकको अध्ययन शीर्षकको प्रस्तुत शोध पत्र मेरो निर्देशनमा तयार पार्नु भएको हो । म उहाँको यस शोध कार्यसँग सन्तुष्ट छु र यसको मूल्याङ्कनका निमित्त नेपाली केन्द्रीय विभाग समक्ष सिफारिस गर्दछु ।

.....
प्रा. डा. जीवेन्द्र देव गिरी
नेपाली केन्द्रीय विभाग
त्रि. वि. कीर्तिपुर
काठमाडौं

त्रिभुवन विश्व विद्यालय
नेपाली केन्द्रीय विभाग
कीर्तिपुर

स्वीकृति - पत्र

त्रिभुवन विश्व विद्यालय मानविकी तथा सामाजिक शास्त्र सङ्काय अन्तर्गत नेपाली केन्द्रीय विभागका विद्यार्थी मीन बहादुर पुन मगरले स्नातकोत्तर द्वितीय वर्ष दसौँ पत्रको प्रयोजनको लागि तयार पार्नु भएको प्युठान जिल्लाको पश्चिम दक्षिण क्षेत्रमा प्रचलित मारुनी लोक नाटकको अध्ययन शीर्षकको प्रस्तुत शोध पत्र आवश्यक मूल्याङ्कन गरी स्वीकृत गरिएको छ ।

शोध पत्र मूल्याङ्कन समिति

.....
प्रा. डा .जीवेन्द्र देव गिरी
(शोध निर्देशक)

.....
उप. प्रा. मधु सुदन गिरी
(बाह्य परीक्षक)

.....
प्रा. डा. देवीप्रसाद गौतम
(विभागीय प्रमुख)

कृतज्ञताज्ञापन

प्युठान जिल्लाको पश्चिम दक्षिण क्षेत्रमा प्रचलित मारुनी लोक नाटकको अध्ययन शीर्षकको प्रस्तुत शोधपत्र मैले त्रिभुवन विश्व विद्यालय मानविकी तथा सामाजिक शास्त्र सङ्काय अन्तर्गत स्नातकोत्तर तह दोस्रो वर्ष दशौं पत्रको प्रयोजनका लागि आदरणीय गुरु प्रा.डा. जीवेन्द्र देव गिरीज्यूको कुशल निर्देनमा तयार पारेको हुं। आफ्ना कतिपय व्यवहारिक कार्य व्यस्ततामा रहनु भए तापनि मलाई शोध कार्य गर्न समुचित मार्ग निर्देशन एवम् आवश्यक सल्लाह प्रदान गर्नु भएकोमा शोध निर्देशक श्रेष्ठ गुरुज्यूप्रति म हार्दिक कृतज्ञता व्यक्त गर्दछु।

शोध प्रस्ताव स्वीकृत गरी शोध कार्यका लागि अवसर प्रदान गर्नु हुने विभागीय प्रमुख प्रा. डा. देवी प्रसाद गौतम एवम् नेपाली केन्द्रीय विभाग परिवारप्रति कृतज्ञता ज्ञापन गर्दछु। प्रस्तुत शोध पत्र तयार पार्नका लागि आवश्यक पुस्तक तथा पत्रिकाहरू उपलब्ध गराई सहयोग पुर्याउने त्रि.वि. वि. केन्द्रीय पुस्तकालय, जिल्लाका सम्बन्धित वस्तुगत तथाङ्क उपलब्ध गराई दिने जिल्ला मा. वि. परीक्षा समिति, प्युठान, जिल्ला विकास समिति, प्युठान, कामाक्षी मा. वि. परिवारप्रति हार्दिक आभार व्यक्त गर्न चाहन्छु। शोध कार्यका लागि विषयगत सामग्री सङ्कलन गर्ने क्रममा प्रत्यक्ष रूपमा सङ्कलन भई मारुनी लोक नाटकका गीतहरू सङ्कलनमा सहयोग गर्नु हुने आदरणीय गुरुबाहरू - खुसलराम महरा, जोख बहादुर थापा, कृष्ण बहादुर बाँठा, नम बहादुर घर्ती, मीन बहादुर पुन, गोपी राम र खाल, लीम बहादुर दर्लामी, भविलाल बराल, दुर्ग बहादुर राउँ, हस्त बहादुर बहरा, देवी राम राना, टुकमान घर्ती, भीउसन थापा, सेर बहादुर खत्री, मान बहादुर पुन, बल बहादुर ठेडी लगायत सम्पूर्ण गायक मण्डलीप्रति हार्दिक आभार प्रकट गर्दछु। त्यसै गरी सामग्री सङ्कलन कार्यमा विभिन्न गा. वि. स. का गुरुबाहरूसँग भेट गराउनमा सहयोग पुर्याउनु हुने सहयोगी मित्रहरू- इन्द्र बहादुर सारु, आनन्द कुमार थापा, सूर्य बहादुर ठेडी, भुप बहादुर बुढा, टेक बहादुर पुन र विष्णु भण्डारीप्रति कृतज्ञता ज्ञापन गर्दछु।

प्युठान जिल्लाको पश्चिम दक्षिण क्षेत्रमा तिहार पर्वको अवधिभर मारुनी लोक नाटकका गीत र वाद्य वादनको आवाजले सारा गाउँ नै गुञ्जायमान भई वातावरण अत्यन्तै रमणीय एवम् खुशीयालीले छाएको हुन्थ्यो। वर्तमान अवस्थामा आएर आधुनिक पाराका गीत र नृत्यले यो नाटक लोप हुने स्थितिमा रहेको हुँदा यसको संरक्षण र संवर्द्धनमा लाग्नु आफ्नो कर्तव्य ठानी मैले यो शोध शीर्षकलाई अड्गालेको हुं। यो क्षेत्रको विभिन्न गा. वि. स. हरूमा गएर प्रत्यक्ष रूपमा गुरुबाहरूसँग भेटघाट गरी मारुनी लोक नाटकका बारेमा बुझ्दा यसको परम्परा सुदीर्घ रहेको देखिन्छ। ग्रामीण समुदायका अन्तर कुन्तरमा लुकेर रहेका मारुनी लोक नाटकका गीतहरू सङ्कलन गरी यसलाई प्रस्फुटन गराउन मेरा लागि महत्त्वपूर्ण अवसरको रूपमा रहेको छ। तसर्थ सङ्कलित सामग्रीहरूको संयोजनबाट मारुनी लोक नाटकयुक्त यो शोध कार्यले पक्कै पनि लोक समुदायमा यो नाटकलाई जीवन्त तुल्याउन सहयोग पुर्याउनेछ भन्ने आशा लिएको छु।

पारिवारिक दुःख र कष्ट सहँदै मलाई अध्ययन कार्यमा सँधै प्रेरणा एवम् उत्साह प्रदान गर्नु हुने पूजनीय आमा हीरामोती पुन, स्व. बाबा भानुविर पुन, बहिनी गौरी पुन र लेखन कार्यमा हौसला दिने मेरी श्रीमती रीखा पुन लगायत परिवारका सम्पूर्ण सदस्यहरूप्रति म हार्दिक कृतज्ञताज्ञापन गर्दछु। त्यसै गरी शोध पत्र तयार गर्ने क्रममा आवश्यक सल्लाह एवम् सुझाव दिनु हुने मित्रहरू-होम बहादुर महरा, शीव बहादुर थापा, डील बहादुर जि.सी., लोकराज कालाथोकी र मदन कुमार अधिकारी, वाल्मिकी देवकोटा, राजेन्द्र भट्टराई, कृष्ण सुवेदी, नारायण अधिकारी, प्रकाश अधिकारी, मेघराज अधिकारी लगायत अन्य सहपाठी साथीहरूप्रति हार्दिक आभार प्रकट गर्दछु। शोध पत्रको शुद्धा शुद्धा हेरी कम्प्युटर टङ्कन गरी सहयोग गर्नु हुने श्री सुशीला सिखडाप्रति हार्दिक धन्यवाद दिन चाहन्छु।

अन्त्यमा यो शोध पत्रलाई आवश्यक मूल्याङ्कनका लागि त्रिभुवन विश्व विद्यालय, नेपाली केन्द्रीय विभाग, कीर्तिपुर समक्ष पेश गर्दछु।

शैक्षिक सत्र : ०६५/०६६

मिति : २०६९/ ०६ /

शोधार्थी

मीन बहादुर पुन मगर

नेपाली केन्द्रीय विभाग

त्रिभुवन विश्व विद्यालय, कीर्तिपुर

विषय सूची

| | पृष्ठ |
|---|--------------|
| पहिलो परिच्छेद : शोध परिचय | १-६ |
| १.१ विषय परिचय | १ |
| १.२ समस्याकथन | २ |
| १.३ शोधको उद्देश्य | २ |
| १.४ पूर्वकार्यको समीक्षा | ३ |
| १.५ शोधको औचित्य र महत्त्व | ४ |
| १.६ शोधको सीमा | ५ |
| १.७ शोध विधि | ५ |
| १.७.१ सामग्री सङ्कलन विधि | ५ |
| १.७.२ सामग्री विश्लेषण विधि | ६ |
| १.८ शोध पत्रको रूपरेखा | ६ |
| दोस्रो परिच्छेद : प्युठान जिल्लाको परिचय | ७-१५ |
| २.१ भौगोलिक परिचय | ७ |
| २.१.१ नामकरण, अवस्थिति र सीमा | ७ |
| २.१.२ हावापानी | ८ |
| २.१.३ वन जङ्गल | ८ |
| २.१.४ नदीनाला र पहाड | ९ |
| २.२ ऐतिहासिक पृष्ठभूमि | १० |
| २.३ मठ मन्दिर तथा तीर्थ स्थलहरू | ११ |
| २.४ सामाजिक संरचना, चाडपर्व र संस्कार | ११ |
| २.५ शिक्षा, स्वास्थ्य तथा सञ्चार | १२ |
| २.६ आर्थिक अवस्था | १३ |
| २.७ लोक साहित्यको स्थिति | १५ |
| तेस्रो परिच्छेद : लोक नाटक र मारुनी लोक नाटक | १६-५३ |
| ३.१ लोक नाटकको सिद्धान्त | १६ |
| ३.१.१ परिचय | १६ |
| ३.१.२ परिभाषा र स्वरूप | १८ |

| | |
|---------------------------------------|----|
| ३.१.२.१ परिभाषा | १८ |
| ३.१.२.२ स्वरूप | २० |
| ३.१.२.३ लोक नाटकसँग सम्बन्धित विधाहरू | २१ |
| ३.१.३ लोक नाटकका विशेषताहरू | २३ |
| ३.१.३.१ मङ्गलगान | २४ |
| ३.१.३.२ आनुष्ठानिकता | २४ |
| ३.१.३.३ गीत र नृत्य | २५ |
| ३.१.३.४ चरित्रचोतक पात्र | २५ |
| ३.१.३.५ खुल्ला लोक मञ्च र दृश्य विधान | २५ |
| ३.१.३.६ सन्दिग्ध ऐतिहासिकता | २५ |
| ३.१.३.७ गुरु परम्परा | २६ |
| ३.१.३.८ परम्परागत मौखिक अभिव्यक्ति | २६ |
| ३.१.३.९ परम्परागत वेशभूषा | २७ |
| ३.१.३.१० सङ्गीतात्मकता | २७ |
| ३.१.३.११ मनोरञ्जनात्मकता | २७ |
| ३.१.३.१२ अभिनयात्मक तालमेल | २७ |
| ३.१.३.१३ उद्देश्यमूलकता | २८ |
| ३.१.३.१४ स्थानीयता | २८ |
| ३.१.३.१५ अन्य विशेषता | २८ |
| ३.१.४ लोक नाटकका तत्त्वहरू | २८ |
| ३.१.४.१ कथानक | २९ |
| ३.१.४.२ चरित्र | ३० |
| ३.१.४.३ संवाद | ३० |
| ३.१.४.४ सङ्गीत | ३१ |
| ३.१.४.५ द्वन्द्व विधान | ३१ |
| ३.१.४.६ अभिनय | ३१ |
| ३.१.४.७ उद्देश्य | ३३ |
| ३.१.४.८ वातावरण | ३४ |
| ३.१.४.९ भाषा | ३४ |
| ३.१.४.१० शैली | ३४ |
| ३.१.४.११ मञ्च | ३५ |
| ३.१.४.१२ लोक तत्त्व | ३५ |

| | |
|---|---------------|
| ३.१.५ लोक नाटकको वर्गीकरण | ३५ |
| ३.१.५.१ विषय वस्तुका आधारमा लोक नाटकको वर्गीकरण | ३६ |
| ३.१.५.२ संस्कारका आधारमा लोक नाटकको वर्गीकरण | ३८ |
| ३.१.५.३ पात्रगत संबद्धताका आधारमा लोक नाटकको वर्गीकरण | ३९ |
| ३.१.५.४ आकारका आधारमा लोक नाटकको वर्गीकरण | ३९ |
| ३.१.६ नेपाली लोक नाटकको अध्ययन परम्परा | ४० |
| ३.१.७ निष्कर्ष | ४२ |
| ३.२ मारुनी लोक नाटक | ४३ |
| ३.२.१ परिचय | ४३ |
| ३.२.२ उत्पत्ति र परम्परा | ४६ |
| ३.२.३ वर्गीकरण | ४९ |
| ३.२.४ निष्कर्ष | ५३ |
| चौथो परिच्छेद : प्युठान जिल्लाको पश्चिम दक्षिणमा प्रचलित मारुनी लोक | |
| नाटकको वर्गीकरण र विश्लेषण | ५४-१४० |
| ४.१ प्युठानको पश्चिम दक्षिण क्षेत्रमा प्रचलित मारुनी लोक नाटकको परम्परा | ५४ |
| ४.२ वर्गीकरण | ५७ |
| ४.३ विश्लेषण | ५८ |
| ४.३.१ आख्यानमुक्त मारुनी लोक नाटकको विश्लेषण | ५८ |
| ४.३.१.१ पैसरी | ५८ |
| ४.३.१.२ चुटुका | ५९ |
| ४.३.१.३ खेली | ६० |
| ४.३.१.४ दग्गा | ६२ |
| ४.३.१.५ गुरु भमरा | ६४ |
| ४.३.२ आख्यानयुक्त मारुनी लोक नाटकको विश्लेषण | ६७ |
| ४.३.२.१ सामाजिक मारुनी लोक नाटकको विश्लेषण | ६७ |
| ४.३.२.१.१ गोपी चन्द्र मारुनी लोक नाटक | ६७ |
| ४.३.२.१.२ सोरठी मारुनी लोक नाटक | ७९ |
| ४.३.२.२ पौराणिक मारुनी लोक नाटकको विश्लेषण | ९४ |
| ४.३.२.२.१ कृष्ण चरित्र मारुनी लोक नाटक | ९४ |
| ४.३.२.२.२ रामायण मारुनी लोक नाटक | १०५ |
| ४.४ प्युठान जिल्लाको पश्चिम दक्षिणमा प्रचलित मारुनी लोक नाटकको उठान र बैठान | ११५ |
| ४.४.१ प्रथम चरण : मारुनी लोक नाटकको उठान प्रक्रिया | ११६ |

| | |
|---|---------|
| ४.४.१.१ बारताल र ठक्कन बजाई देवताको मान गर्नु | ११६ |
| ४.४.१.२ समरत बाँध्नु | ११७ |
| ४.४.१.३ गहना कपडा पहिऱ्याउने | १२१ |
| ४.४.२ मध्य चरण : समरत बाँध्नेपछि नफुकाउन्जेलसम्म प्रस्तुत गरिने प्रक्रिया | १२४ |
| ४.४.२.१ देउसी भैलो खण्ड | १२४ |
| ४.४.२.२ दान माग्ने खण्ड | १२६ |
| ४.४.२.३ आशिक खण्ड | १२६ |
| ४.४.२.४ विहानी खण्ड : हरिण हरिणीको गीत र चरीको गीत | १२७ |
| ४.४.३ अन्तिम चरण : मारुनीको लोक नाटकको बैठन प्रक्रिया | १२९ |
| ४.४.३.१ उत्पन्न प्रक्रिया | १२९ |
| ४.४.३.२ विदा माग्ने प्रक्रिया | १३० |
| ४.४.३.३ गहना कपडा फुकाउने प्रक्रिया | १३३ |
| ४.४.३.४ बाचा बाँध्ने प्रक्रिया | १३६ |
| ४.४.३.५ भोग दिनु | १३९ |
| ४.५ निष्कर्ष | १४० |
| पाँचौं परिच्छेद : उपसंहार | १४२-१८५ |
| ५.१ सारांश | १४२ |
| ५.२ निष्कर्ष | १४३ |
| सन्दर्भ सामग्री सूची | १४६-१४७ |
| परिशिष्टहरू | १४८-१८६ |

परिशिष्ट ६

मारुनी लोक नाटकका तस्वीरहरू

भैलो खेलेको दृश्य

चुट्का नाचको दृश्य

कुसुन्डेली खेली नाचको दृश्य

दग्गा नाचको दृश्य

रामायण मारुनी नाचको दृश्य

गहना,कपडा फुकाएको दृश्य

मादल सर्गमा चढाएको दृश्य

भोग दिएको दृश्य

सङ्क्षेपीकृत शब्दसूची

| | |
|---------------|-------------------------|
| अप्र. | अप्रकाशित |
| एम. ए | मास्टर अफ आर्ट्स |
| एफ. एम | फ्रिक्वीन्सी मोड्युलेसन |
| क्र. स. | क्रम सङ्ख्या |
| गा. वि. स. | गाउँ विकास समिति |
| चौं. सं. | चौथो संस्करण |
| डा. | डाक्टर |
| डि. से. ग्रे. | डिग्री सेन्टी ग्रेड |
| त्रि. वि. वि. | त्रिभुवन विश्व विद्यालय |
| नं. | नम्बर |
| नि. मा. वि. | निम्न माध्यमिक विद्यालय |
| पाँ. स. | पाँचौ संस्करण |
| पृ. | पृष्ठ |
| प्रा. | प्राध्यापक |
| प्रा. लि. | प्राइभेट लिमिटेड |
| प्रा. वि. | प्राथमिक विद्यालय |
| मा. वि. | माध्यमिक विद्यालय |
| वि. सं. | विक्रम संवत् |